मिश् नाहिः याग इतः मिश् यतिः ताथनीय यत य नकतः। सभी पान एम बातिः, काथक मनी व्यथनीः नातः व्यव्य वाकित करता ।। जित्र नामा एस्ट्रे मृत्योः किन्नत करत मसुरक्षेः सम्पन्नद्वन राज्यकारतः । के क्षानद्व सर्व भाष्ट्रके सम्पन्नद्वन राज्यकारतः । के क्षानद्व सर्व भारतः याद्य स्तृति दन्नकिः उपानकः स्वय रह प्रारतः।

শ্ব মন্মবের লিপি কিটেশর প্রাপ্তে প্রত্যুত্র। পরার। বারীরে জিজানি দাস রাজ পুরীযায়। উপ লিত ছইক কিটেশর বৃথার ॥ নমজার করি করে যি পি দিল দূত। ভ্যায়ণ হেত প্রিকেন রাজ মুদ্র।।

া নি নতি নিভি নতি লভিংহ যভনে।

দান কাথি ভগতিত গুণ শুন্ধ শুন্ধে।। দেখ লা ভ কংশ নেজাবিবাদের হেল ।

্ পণিত বা হি ভকর বান্ধি থম সেও।। । দিমেল শাখী হে সঞ্জি মনী কর মুর

सप्ति छेपस है। सात एड व भूते ॥ वशाहित छेलाभी छ स स वित हरी।

विरम्यक वादिक की व न किशानक ।।

ে অব্যক্ত নিশাভাগে নিয় ম যে কালে। আমার। শৃহংগ আশীবে য থ ছলে।।

ं समय राजात्त्र राभ कर वह हो ग्रा

वार्ष्य महाचार्य नाम शाम था सनी

বার পাঠ করি রাজ প্র হরদিত। সহগ্রিকটা आकि करतन विक्रिन ।। भूनः धर्मनुत वहन आभाव विश्वन विश्वतन श्रद्धां वन नाष्ट्र कात्र । विरुष्ट स्टबर वाशि वाभजन महरू। निक्रम याहेता स्था वर्षात नीटा ॥ कह निरंत्र अनमस्य अहे निरंदमन । का ना क (व बाद्रिकाय जिथिएक जिथम ।। अध्यक बहुन छनि बनो किस्त (उपाटेश्टर असन करिन अक्स ा छेन्दि उद्भाव काश्वि मनमथ कार्ष । जानावेल विवद्भ श हारम करहर ।। कि किया क्राया व मुक्ता में भार वानमा जाशद्त यन जारव जानियात ।। य रनश विरवेश ना कत्र विख्ता। जाद वृक्ति जाव रेक्न भारे दस् हत H विधि वृद्धि चनुष्ण राजन बागाय । बा अस् शक्ति इदद स्परि बिन्धि से ।। बद्धक हिन्द्रस बार्न छाटकम किसारत । पिया कर्यमान इस एएथर नस जिन। यमानी बाइरन जान मुन तसनीरक। शामा मु ল'আয়েয়ন করহ ত্রিতে ৷৷ এতেক বচন শুনি অম ी किन्द्र । नागा पुरा धाइत्र क्रिय विस्त ।। धरत्र त्य भारत त्राभिरत यज्ञान । यो ए क्रामाहिया व व बारत अनुकरण ।। (मृज (मृज क्रीक मासाध रह

গত। বা স্বাহে রত, খন রাখিলেক কতা। কিটকাই করিদাস দেখায় ক্যারে। আই দিত হয়ে অতি ভা বা অভারে। কতক্ষণে সূত কণ হইবে কামার। কি টেম্বরের আলম্যন পবিজ্ঞার।। রক্তরিকইলোপ্রা

त्मांचन भगता। मुदबक स्थात ज्द समीता द का बन्धि (पर त्याद यारे निकालता। यात अक विपन करि उर हाटन व्यवना बाहित्य कना काबाद ह क्ति। उड्डियंड याडावाटंड यड मधे इस । अका ति उउदिक कडूना नक्षा ।। बड्य अब्बागरे क्षि रेड् असन । यथ वार्टन चारत किना नृशिक वन्तेन । सनि एश चिकीत भाग कामण ताया मुख्यतीत महस्य हरे न विष्या विख्या श्रेष्ठांड कान (प्रियः क्यांग्री क न भूजा करि एपम करिन बाराय ॥ भरत भूमः क्रि र्ता विषुत छेरेस । याहरणन सनम्ब महत्य भागः किएडेचंड पिचि ठारत केंद्रि समामद । विभिवास नि হামন দিব স্বতঃবর ।। উত্তরত কত মত প্রনার প্রব रम्। किर्छिपत जास साय जाम मनतर म । जानार व बारयाबन कतिए यथाया जिनानि श्रामा पूर्वांड उथाय ।। नाना चडा का मुक्तिकरण मुख्य वीष्ठमन नित्र शरहरेकन नमें खारनी मू चम्बी कि বীর চাদ অনুমতি ৷ পিড্যানাধি দরশ্বে আকিক विकिता अनुसन स्ट्यू यदि वो अधारि अब । सामि ह वाजिरवा (हजां क्रियंक्रिवा व शिक्षकरन विकादन लियाजामारङ। क्षाचन विभन्न मिस्ना मनना

मानाश सामित्य तार विकाय स्वत्य स्वतः । यह मान स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः । उत्य यपि कि दिश्य स्वतः स्वतः । उत्य यपि कि दिश्य स्वतः स्वतः । उत्य यपि कि दिश्य स्वतः स्वतः । उत्य स्वतः स्वतः । उत्य स्वतः स्वतः । उत्य स्वतः स्वतः । उत्य स्वतः स्वतः । अहे मान याजाशा उत्य स्वतः क्वा । स्वतः । अहे मान याजाशा उत्य स्वतः । उत् पि व स्वतः श्रा स्वतः । अहे स्वतः स्वतः । अहे स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः । अहे स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः । अहे स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः । अहे स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः । अहे स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः । अतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः । अतः स्वतः स्

्रिया**र अगर ।** विदा**र अगर ।** 

श्यात ॥ व्याप्त वाशित्वः भूदक उनम् । हानएक करिन उपक्र भागा (स व्याणमा। याम को हरे एउ (भाव रेस के नकात्र । करवरका भृतिक हरत वामना व्यामात्र ।। तरह क किंद्र श रहसे। निक्ष मान्य मक्त क व्यामात्र ।। तरह क किंद्र श रहसे। निक्ष मान्य मन् व्यामात्र ।। तरह क किंद्र स्वामाक ।। अत्रे मक मन् व्याम । व्याम । रहम कारण मुझते। चन् का रह अपम ॥ व्याम व्याम भग किंद्र कींत्र काल वार्थिक व्याम । व्याम हरस ह श्रमक ।। किंद्र काल वार्थिक वालमा रस महम । मा ब्रह्मित (क्षूम कार क ब्राह्म ग्रम

मा। अकारण नयका कि वाकिकत। क्रिक हात वाका निवटा/ ध्यम्य ।। अध्यापाठ वाक्रिकां न हिन छेनारी । यन नाएं ब्रेट्स मदम कि क्रिट्व। इन्ह शाना कारन रेयथर्यका रूल संस्थान्ता। उनस्य पर ग्रजनात्रवानमा ॥ ज्ञाट्यत्रवाकी श्रमिकटश् वि क्षेत्रत । एव जाव मा तकित्व क्षेत्र अखहा। विवक ল প্ৰেম রয় এই বাল খাতেনি একোণে কলুকা ইয় ক बारत कतिएक ।। अक विशेष के प्रकार वाहरा महत्ता। उनायक माजाजादक नहीं इस माजा 1। उत्यक वी मा निर्माह रमाधि काला है। सिरवार ह केलर व्य निक का वि कार ११ (पश्चिर अप) लिएस कहिरवा लिखासा महस्रामी ই হলে বিশ্ব। দিবেন ক্লেম্বার ।। তোমার বামনার তে লাভে কিনা আছে ৷ বৰণ কহিবে মোলে ক लिखा कार्ट् । छनिया अभावाताय विनय्यक्तिको । साधार रश्याधिक विकासाहि रशा जनः शुक्त कर्य यामि नाहि भूँ त्य भारे । इन्हें न मानत मक क्रेत्य बाबाहे। स्विनि किरहेचन कह नाम भूनः ताम। भटना या इरव जव प्रतिदल जाशाय ।। क्रमें के भाग हो व वि कृत्म यादर मन्। यात्री याजनावी जिल्ल्याङ्गी

स्वाह सिन्निय सन्दर्भ स्य सन्य जिल्ला (जायाद दर्भ व्याह्म स्वाह स्टब्स महाजित व्याह्म स्टब्स महाजित व्याह्म सिन्द्र स्टब्स स्वाह सिन्द्र सिन्द्र स्टब्स स्वाह निर्म्ण सिन्द्र स्टब्स स्वाह निर्म्ण सिन्द्र सिन्द्र स्वाह सिन्द्र सिन्

ছিবে। ভোষারে সবিশেষ। এত বলি ভ্রাত্ত ক্ষা लंब नव्य यक गाम यान कृतियाद्य (भ्रष्ट ।। श्रातम्। काश्य वारमः अनक यथाश वस्मः कर्ष छारत याग कति करे । ज्यारह कि इ किरवमनः श्राकाणी जव जयन वानिया हे छान अस दत्र १। मिथिया नेशव थानः (क লেখা ভূপতি নাৰ: তাঁর সূত নামে মনমধা সম্বধ্ গণানিতঃ সার্গ শানত সুপ্রতিতঃ ধীর লাভ হত বার্গ मुल्ला। कर्तन स चत्रवर्णे, विकामिटन वक वर्णे, (यस তব হয় পানুমতি ৷ পূৰণে ভূপতি কয়; ডোখার কি मङ रशः विराज्ञाति मुझती मछि ।। समि समा গাপ্যা উপযুক্ত দেখি লাব্য দেহ্যারে হয় বাড়িপ্রা मा जान छात्र स्विरेश्यः (यन नाष्ट्रि शोष्ट्र द्रिण, जात বেৰ জাতি রক্ষা পায় 🕕 এত তাৰি কিটেখর পিতা वि करत छेल्त, भभ छेल्। सिर् बर्स निर्देश। रहमक उल्य रतः विनद्भ प्रिय पूच्या नाहि भारतायहेरक वानित्व ॥ भूवरण मृद्राच्य भक्ति निम भूटा चनू बाउ নাও তবে কেন্দে এনো বংর । তোমার হলে পসস্ক ाद्द नाहि स्थात नद, कत शिद्य (यवा भारत श्रुत क দিন্ত একবলি কথা যথাপ ভোষার যাতা এসময় नारन विकाद । विकाद दिए नियुव्यारम, सामा । सम्ब

हार्या प्राची क्रम करने मा जाता है। शिवा बाका वि हिमातः अक्टब वामि अवृतः सन्नीतः करर कन भूति विश्वना गुप्रवादी भकि बादम (कार्य अन् भिंड, उ द्रमाद्या अरमरह रेनक हो। नाम एस अपन्य पर अप बल क्षा राज्य व्याक्ष्य व वारो मुल १ रव । कर्जनम चत्रक्रा ক্রী সেতে প্রেটি কর। বংশধর ভ্রতের সবে। চবড के जिस्तितक काला अंतर जटन क्येंक कार तथिति केत यान्। एक्षी। थाकिरव शतमा नूरशः डेशम्डा स्मिछ। हत, ह्याचिक् बारभने चनुकान हो। उन मरकन काउन क्षेत्रक करत ।(श्रुवना । स्वतः । जन कर्म कर्मा जन क्षाब्दा । कृति । श्रमनः । विनादि । कि । श्राद्यानः याहेरज क्रेंटर मिनु भाषि।। अति कानी मुख्या क्य वाशवाम यहि स्थान जरव काकि (परेकन)। जादत । यहि बाद रि थानेटल, काम हाम रम अस्टिल, এই ब्यान इंग्ल विकादत ॥ अभि किर्छेषद्र क्यू, जांस (म्बादत) निका अन्। ब्राट्ड मानिएस अथारन । जीव नारक् व जिल्लामा प्रियान जन कन्यास न्या इत्य चारहन श्रद्धा । अ यन नार नामान्य नल मरश्र इस्मान करवं भावि द्रारशिक् जुनारश । अरव हिन्नाम उर्दे

शि करन यानिएड हरवा स्थान करमें विशि कि नानिया

০ত ব্লি নুপাং দুউন হ্টট্টুনুগানীকে ঘুঠা চলিবের মন্ মুখ বালে। আৰু পি শক্তী পারে উত্তরে রাজের ঘরে लगा क्रम्पा विद्रालिने मारिक क्रिका महालेखा । स्थ सम्बागकत गानि कम्मान केरणाना । विषं छो भगे ६ स्विताक किर्छे पंदन निय योग करन क्टतः वसाहिया नगरम्बद्धः जिल्हास्मन कन्नन वाद्धः। रू श्वान महत्वा उनयुः एतिए व माहत कयुः इरका छान् लाष्य, विकार करत्रका शिका ।। खबनीत वाकिश स लाग्न करत्र नित्रका, रूल भएनत भडनः कहिएक মেরাঅৰুমতি। প্রবে প্রবিষ করে, কথাতে বলিলে शास्त्र समनी (परिश नकरतः) वर्ष केंद्र व्यासना (समा বিশেষত শুনবলি, রূপরাণ বরহলি, প্রসংশে নারীয় कांन,यिष्यांनम् । वृध्यक्षीन्। हारक्षाकारनत् कना য়াহাতে না ধরে কলঃ শেষে বিপরীত কলঃ হলে গা हैरन छ। हात किन ।। छल्पन छ दे । श्वास का न भाषात्मः पिणि स्मरश नर्नहन्त्व, त्थरश किलि वि हत्कत्र माधारमधि अदर बाजा वाजि, नर्साहिन है। का किए, निर्देश (क्रिज़ होंकि सुंकि अञ्चल रहेला (क लामका । खानिएस नादीह मनः कायात अवाकिकन ध्रदेव विवास अञ्चल, एस याचि नयन मुन्दरार उदय क्षे

अर्झ किल नाहि थारक मकुछिक, करि धरन हरोडिक का कर दे दे हैं। बारह का गा भी देने ।। किथा का कि श য়ে জন্য আপনি নূপ নক্ষান্ত আৰ্থি নহানি বিচক্ত खरम्बि घटेक श्रमुबाद । विम् अ वृक्ति संभवत्म, पिवि लिहे मिलियान । एस स्टब्स्य मान, यात स्टिम आहे से (यमक ।। এডবলৈ किट्टियतः यनमध्य रहमश्रः, ला। কাজ্বে মনোধর) আছে বাহা সম্ভি ব্যহারে ৷ যে इंड इर्ट्स याय अरमः (वर्थानेत्या स्मारे सहमः यमि प्रदेत ক্রম মনে: ভবে হবে বরিভে ভাহারে 🔃 আর কেথা ক্তিবা **মার** ধেবা তার অভি প্রায় ক্য় গে**রিয়ে ভো** ুঞায়া কহিবেদ স**রিশেষ** যোরে। দে**থিলে ভেমো**র क्षणः जुलिद्वन । स्टब्स खुल, क्षत्रेकी इट्ड विक्रिट्लाः विदे কোতে যদি দৃষ্টি করে।। শুনি সন্মধ্য রায়। সুবেগ कतिरसं थासः विधि यती वास्ति। सं वरण इसा उर्व मिकालको। दमिथ संगादकत (यम, किटियन दरल (र के अमें इत्या कार्या (चवः इत्या वा वा वा व वर्षा ভাছা শুনি রায় কয়, আপনি যারে সময়, তার আর क्रिता छन्नः बर्ग क्य कर बनादात्म । कर्ड वह द्वारी क्षिणः यत्र मकान कात्ररणः भिर्देष कति विद्योवरणः रहे রাথ রাবংগে বিনাধে য়া জানি সম মিতে তাই; মরো

श्री साम कि कि के कि स्वार्थित मार्थित स्वार्थित के स्वर

য়। কিবা ৰূপ ৰূপ ক্ৰপ স্ক্ৰপ না দেখি। স্ভানীর 🔻

ध तत्र मिनाहेन ज्यो ॥ मरन्दक मामात्र वरः वाहि

न न सहर। सथ्मित्र शहर प्राप्त (यन तमा विस्त्र ভাল হৈল নিজ নেত্রে:করিবনিরক্ষণ বু সন্দল্পে কর্মি বে: পূত্রীমূপত্রে করে। । ভাবেভাব মেলে ভাকতা तक किछ्टल स्थाप क्यांतित स्याहतस्य स्टब्स्टर ইমত রাণাক্ত;ভাবিতেছেমনে কেনকালে দুইজনে अस्वरण ज्वरन । अस्विद्यान यनसंस्थ सुरत्या आसार চেহারায় বুঝিলেন ভূপের লক্ষণা। পরে রাণী নাক্ষ या जाभनावारण माम्रता मुक्षतिरत जाकारेया एकरेन नाजाया। ज्वरप अविक्र करते माणिक हिताया। युक् खात काव गटन किया रम्। <del>छात्रा हा भारता, खात्र के</del> वकी गाणी मापिर। बाहासणी मानि शरत व्यक्तिओ পদ্বী।। কি করে সুষ্ণে জার নিজে রূপবতী। স্বিঞ্জি লোকেণোয়:দিলে লোহাগা যেমতি 🖖 ওখানে সু রেজাসুত মনমথে লয়ে ৷ মহানে গমন করে হরবিত एएस । त्रज्ञानतन भृष्टे करन विश व्यवः शतः। (कोष्टक् श्रमक हत्व जानाभ दिखत ।। मुखती अगड भरत चा खें। एन प्राठ । कतिछंत्रा भारणता निक्**ष्टि आनिएछ** ।। দেখিবেন ৰাজ পুঞ আপেন নগরে া বৃদ্ধলে দেখি स्क इस कि वादत नादत ।।

শ্ব জিটেশ্বর ক্জিক মন্যপ্ এরণ

भूक्षती छेख्य प्रभान ।।

Sancia Comale

প্রার 🕴 আন্দশ্ল করিল যদি স্বেক্স উপত্ন 🕽 উ ছিত জনে গিলা অক্রেতে কয় যা শুনি সব সংস্থা मुक्षकीरत नरम । इन्यानत समस्य करभ ताल बाखा की য়ে।কেপের মাধ্রীভাছে হ্যপ্রকাশিত কে ভগ্তদে है। विभी नक्षिति विकित । छे शक्ति देव्य कम्। मूजा বিষ্যুমান। বসৰ খালিয়ে করে স্ত্রেমণে পরিত্রাণ।। য क्राम्न छ। इतस्य वित्यक्ष वित्र कारण । वाशकाश क्षान स्मित्र व्यक्त भरतन ।। कारमज काभिनी क्रकतरभन बाधनी কি ক্তি বৰ্ড ক সেই করে বুক্ষচারী । লাজ ভয়ে বেভ ्रथ जे ठिट्स उपने। किएन म्हास ३ एउ इहेन भन त्। क्षार्वत स्थाप्ति क्षादी महिल। क्ष्परणते বাণা ঘাতে হইল পিড়িত এ হয়েছে যৌবনাদ্য হাদ্ त्र साक्षारतः। जादर् वनी वित्र हिंगी क्षमम जेवदत् ।। जारन यस कहे जरन सरशिक् काथाय । यह दाकि খন আছে বিবাহে আলায় 11 ভাল বিধি হেন নিগ্ যদিকোমিলায় কেদভেররাজা করিরাথি খেএহায় रवन क रन किर्दियंत्र करह मधी भरता वास्राता रखा नता मुख्य कल्च ८ क्वरम् ॥ अमि सुद सुरुवश्ची युक्षशीया

Land Top wast क्राया। बाखार्थु १५ थरना बाजि इत्रविज इर्प ॥ (मूस् इति भरण करव दांख्यी विकामानी कशिया कहिंदा विक्री किटिई नाहि याने। यनेन इंटेन स्वाद रिविट्स भूषादो । खनमात चाकिकन युक्तिवादर मात्रीना **म**्यहर इतित्यम भूवरेक भूदिरका । (इनकारम किर्हेश জিজনিমতে একোনা কহু মাতা কেমন দেখিলৈ এই दर्भ । भजनम् क्रियाक किना सक्षण वं छट्डा। खेनि हो ी अष्ठापन कर्टन विवत्य । असन इहेन सन क्षारण अथन।। विवारम्त्र काण वशास सा कतिरू चाका ্রহ গিয়ে ভূপভিরে শুভানযাচার ৷৷ শুভা মাজ জি ४ क्रिकेट खनरक जानात् । अ**श**िकि मिरक्यकान्छः विवादह लाक्ष्मा । भक्षाभाव नभ्राष्ट्रित ठाएका,कतिएउ । एउ क्रम विक्य मा इस कान मठि ।। स्वर्ग सामा वास्त 'ध्रम वर्ष कहिबादा । एके। हार्या। श्रीक्षी यानि वात **िछिथि भटत । इंडेक जटगुउ हिंद के हिन उन्हाटत र** আমুমতি দিল পূত্রে পত্র করিবারে ৷ রাজ আস্তে পে ध्य क्रिक्कियंत उथा यास्र। स्य इत्य विनिद्ध आर्वह वीते भण क्रायमा निकास के वरण ताम ना साविह सार । न निक्ष नाहि सम छरमूत विकात ।।

व्यथ यनम्य व्य भू भू अहीत वर्ष श्वा

श्रवाध ।। व्यानित्व मुद्रका मृह मनगरण कथा । ज क दननी माख्या पिरलन निकास 🕦 लक्ष् पविरक्षन 💖 রে ডাকিয়ে পুরোহিত। পতা করিতে হবে কাছর রী ভ্ৰমীত ৷৷ কব্লি ভবে আয়োজসংগত্ৰ কবিবাৰে ৷ শাৰ্মি हिन क्लाहारी मक्लाचाहारत ॥ गुराय क्यात क् बालापि इस । एक पिरम निधि नृति इसेन कपसं 🎚 বিবাহের ফুলা বুঝি ফুটিল আখার । তোমা হতে খু ঝি দম হলে। উপকার।। তবে আর বিকংগতে নাৰি প্রয়োজন 🏗 পুরোহিতে ডাকি ভাষে লিপথে লিপন हिन काटन व्यवाहाए। आहेन उथाया (तप विधि व (ड अ्न क्य समाधास । **ज्ल मान**) यन। स्थि एक মনমধ্য হরবিত্র পুরোকিত আদিবিদে কড়া। প্রে बाय बार्याः थरतं करतं निरंधनन । अरक्षरं वालना वा न ज्ञात्नरङ अभन हो। गुरु भाज महात्रास करक् अमब् থে ৷ বাসাগারে থিয়ে দিব হরিদ্ধু পাজেতে র আর্মি ভাষি শুনিকাছ লণ্ডের সময় ৷ পূর্ব কালে ভিপনিত र्दर व वालको वस्थान यज्ञान वालिक करिय শুভ কর্মে বাহু ভবে না করিছ দেরি ৷৷ অভঃপর বি क्षिण्यत करिएम्-विनयां त्रास व्यास्ति। स्थरत वीत या বাসুলিয়। আসি বঙ্গে তাকি কিন্তৱে ক্লে স্থিতিশ

भगमप मुक्ता र

होम किंद्र मिसी भाग स्पानिक गरम्भ ।। वस्त्रार्भ वि विकास हर धारप्रावन। कह नव खड करण करता वा জনন ৷ আত্তা পেয়ে যায় বেয়ে সমারের দান বি বিল পাৰতী কত নাহয় প্ৰকাশী। আলাপিড ৱনৌ নিম্ভেরণ সমাদরে ৷ স্তানি শুভাসমাচার আইলে জ जुद्ध । अबारम नाहिक नाती कानिया अख्रात । त्रश প্রার ছলে সবে নারী বেস ধরে।। বলে কেন শুভঙ (मा हरद अक हिन। बानदी आहि (इ संघ अन्य ज হিন। কাট্টের শাক্ষারে ক্রিবা ক্রিছ্য় বলা স্বিক নাশিতে পালে দ্যায়তো ভল ৷৷ এই ৰূপ রহান্য ক রয় বন্ধ জনে। মাদেশিক কৌরী কারে ভাকিতে এ ক্ষেত্ৰ চাংকান রামা নিজ শাশুর ক্রোন রামা কারী ট रकाम गरमा वस रेडन रक न श्मी वादि !। 'र्तिमू। गई বল। কেই অধিক যতলে। বরণ ভালা সিরে করি अ রী সমরে। হাস্য পরি হাস ব্রপে যায় ধিরেই 🖹 উ श्रमिष्ठ इंटना आणि स्पादित घरत ।। जान वरण कि वा अस्तिमधक हाहिता । कड मणी छेमशाणी विरम मो (एश्टिस ।) े भ्रेय राज्यरशत भारत श्रिम् !!

ध्या ।। राम्स्टर छाट्य हम्ती सञ्चारत महत

दश्रमी इस् । (यर काम घटन मन्पर्थ मटनः पृथ्ध माहि त्या। अवादम गाइटर द्वारः गम त्य वृद्धिक कार्य, शास्त्रायः स्कि इत्त महि गाएथ क्रम क्रमा श्विष्य द्वाम वानीः तम नीवा चिक्रमानीः वरन इत्त कि क्रिटन वर्ष मा चात्र क्रमानाः।

निन्दी। (पिश्वा स्वादि द्वा हो ए प्रित्य में किन्द्र ने किन्द्र किन्द्र

(त !' श्राहित महनः व्यवः यन कात नाकि काताः मा (वस्त्री) बार्य शहिरका भविष्ये वार्यः चाह (व ই ফ বাংগে, শীক্ষতে ভবের কাম দুবা। এই মাত বের क्टल लहिए क्यात खुटल भूवि ताम क्टल क्टल ला। वरन बाह रम्हि रक्त. एहिए। कह राजभा, इन् म बस्तुम पिटणकारन ॥ भा निरम् द्रमनी शक्ताके स्वामि कर्या गरनः इतिया रक्षणा करत घरमा कि करत म् भाषा सनि, कर करत्र उस्तर निः (काम सन् रेपर भ म द्रारक् ।। (कर् नाएक शहर भारत) भारत महाविद अलि कामा करत याना कत मुद्देश । शामकदत मिन कीटन, न हिक उद्याप नित्य, तिक् तिक विश्व देशमृत्य ।। अर्थ लक्षं क्या सरहर त्यार्ट्य एत कायरका मनमर्थ क्य ইত্য ধান। পরায়ে প্র : খন্য আছারের **অং**য়োডন ফরিলেন সকলে সমান্য বর সহিত একজে, ভোগ व व तिरम् वर्षः विवादस्य ह्य यानानम् । कहिल সুগদ্ধ। বাসিং হবে বলো সহাপুনির হলে আর ব अहर व्यम् ।! অথ মুঞ্জরীরর সংত্রে হরিদু ।।

जिल्ही विश्वास मूद्रकान सः जून महल्हा सः विदारहत क्र भारम्हासन । निश्वि (मह मूल भरणः स भवप्यन् अप्राप्त

कि वरित्रे निर्वेखरथः भूरन अभ कन्त्रात रहत १०वे १४ वे র ভাও করঃ সংবাধিজ্ঞাপণ করঃ এমবাংশ নাচন क्षित्र । श्रीरशाक्षमे मुन् योजः व्यानग्राम का तराः वाज ক্র সন্দরি ভবনে । পিতৃ আন্তরা ক্রিটেখনঃ নিক্রে शिक्ष निर्देश के निर्देश के निर्देश के विश्व कि श्वतानिक नाना पुरा कार्यशास्त्रकः मातकाम विक्ति कर क्रिक्त । जन्मदा क्रांना ए शहतः मिक क्रमनी (शाक्रद्ध) नुनि तार्थे श्रम्बिंड कांग्र । करहन अभी पर्या एक क्षेत्र श्राद्याब्रह्मः यार्याब्रम् कंब्र्र्टमा छाङ्ग्यः ॥ सान् किंह क्रम मरवः श्राहासम मुत्र करवः चारशकात क ति हामासरम। श्रुद्धाणी काष्मोभनः कालाशिय जी जी सनः मास्याक वाहित्स स्टब्स्स । यात्म शुरत साम्ह করে; মনে: সংখ বাদ্য কং. ১৮বস্তারে বাহারা হ্যু পাঁ থি। উপাত্তি কাল হেনিঃ গরিং দব সুন্দরীঃ গরে জ গ্রংন করে গভি ৷৷ ছরিদু৷ লইয়ে রাশীঃ মুঞ্জা র কাছে আসিং ক্ষলাকে করয় লেপণা কেই করে ল'্থ থানিঃ কেছ দেয় উল্পানিঃ ধনী গাং আছালে স গণাং সভ গন্ধি ভৈল আদিঃ রাণী মার্থাছে আপনী অবিবাহ ম: টে লয়ে জান। বিধি তত শেষ করিছ আন নি সুবাসিত রারিঃ করাইব যুক্তন্তে ধাব ৷৷ প্রট বা

प्रवर्ग न मुक्तिका

ा खानिभरदः निव करत कन्। भरतः सकःभरतन्ति িছ। ভোজনে। আয়ুগণ সঙ্গে করেঃ শুপ্তারী আহার करतः भूषे। भारत विद्यान (समानः)। भएत छ वहन स ংসঃ ধন যাচিকার আশেঃ খিন হীন কুত শত খাড় निम्जिनी महिलालंड बारम स्थान शास्त्र शास्त्र শিয় করয় আহারে 🛘 কেই কর দিন বুমুঃ কেই যায় কিলালয়: যার বাকা মনিব মান্ধে 🕽 প্রজাগণ জা সি পরেঃ যতনে ক্টেক্সন করেঃ অপরে অপর ক্টাক্টি स्टम् ।। श्रीकामत कृति करनः धन भएश् प्रश्नी भएवः नि জং গুছে করে খতি। এই ব্রপে সেই নিশাঃ আগত দিবলে নাশিঃ উদ্ধ হুইল দিনপড়ি।। প্রাতঃকালেউ ঠি সাবেঃ কাম।ন বিদান্তংবঃ দাল্লিখেনপরম ভ্রিমে है छन रहिष्टु। वसन्द्र व्या 😾 🐴 🛍 छ। भः व्याप्त करत्न দেশের। পর দিন উতিরায়ঃ বৃত্তি 💥 अ সম্প্রায়ঃ বিষিষ্ঠত বিধিষ্ট করি ৷ বিশেষ প্রজাশে ভারঃ প্র য়ে:ভন নাকি আরঃ দিবা অবসান হয় হেরি II হেন কালে ৰবপ্তিঃ দিল ভ্তা অনুমতিঃ সিব্পতি সভা जाहारेत्छ। रुप्ती पात्र (माक इत्मः विकासन भरत ব্ৰেচিঃবায় রুচে সভে জানাইতে।। वाश मुख्यातका ।

পায়ার ৷ ভূপতির অনুসতি পেয়ে ভ্রুড় প্রা বসাল্ড করিলে। সভা শোভার কারণ গবিভার হ ্ত্রতগেলে এজাহ্ম ভারি। তথ্নার তৈলকে যে 💵 লাছি হেরি 🕆 ্ অথ ব্রানেশে মনমধ্যের সভায় জাগমন 🔃 ব্রিপদী ৷ সভার কি শুমোন্তন; আসিয়ে নৃপতি গণ্ট মতে বলে হত্ বি**ং**হাসনে ৷ পরস্তুরে ভিজ্ঞাশ্যুট निकर गतिहरू समेच वात्रजा चा माभरण विकास লাব্যিত লাসি; শুজাসনে সতে বঁসি করে দানা শাট্র व्यक्तार्थन । नेर्नेन। भूम भाजि भरते, निक्षर नेर्की खेरही, विनेतारह भाग विकास ।। न्छा नित क्वाँडनारक न तकी मकरक दारमः, जात्म नामा गान नंदम्करह । जि জীনি ব্যব্ধার সংক্ষ্যে বৃত্ত ক'রে সংবারক্ষ্যে কেছ তথ্য সুমধ্র ধরে।। নজকীর নৃত্যু সিভে: ইভ:জ্ স্বেস ा वन्यना (काम कना नगा। असंती क्**छिट्छ छ।** बिह সুরেন্স রাজন কেরি: বর স্থন্য উৎ কণ্ডিডা হন 🔢 🖷 পানেতে মনসথঃ পূর্ম নিশী করি গড়ঃ ধৃদ্ধি শুন্ধ देवन समाधान। जानाहरा। वक्करन, लग्रास्त्र स्ट्रार हो।

करनः श्रोरधाकन गारह यक्षान।। श्रेष्ठकः विरिष्ठ (न

कारण मुझरा १

हरको बाला क्रिड इस वरमा म त्या गांव सिन्ध एक बाक মূর সূত্র্যা করি রায়া প্রণাদে বিকির পায়, কোভদেন एल महेरका अविके । विमान्त्र वामान्य । उस् क भ्रष्टाभारतः खत्र द्वाद्य काल मात्र । भक्ति निविक्ष कृती, देवाल गर्भ उम्भतिर लामर-स् हरवाम हाका भाव ্মহ। লমবৰ করি: নিকটক লগ প্রী: হেরি সংব না যে বিভিক্ত কালে। চতকে দল হতত কামা প্রকাশী নামিই जिस्सार भर मुस्क अन्दर्भ साम स्वासनारक डेमिनिस भारक करिया पृथ्के समामात (सन विकास मन) म जिल्लामा अध्या मुख्यां मुख्यां हुन इन इन्द्रहरू अक मुरके अस्ति निर्वाकत भागीनान्यक का नात्रीता, के अरेगव नेत् शादिनः निवक्षाः नाभराष्ट्रभावतः । भरतर क विस्तृ गाउ अवन्या मा बद्द थक, मुन्सि भागक एरेक म्हारकाक ।। कि हा भक्तमें कि मङ्गे अरली चनने छिड़र, या मरता अंकरि শেভিলাব। ছেন কপ র'ছি ছেরিও বিভিন্ন ক। अविः वरे बात कात्म स्थान । किया की किया क्रिय नुषा यहा हुई विकाशः नाहीत कथा द्वापि चलु हुने कि के करह शृहरम, क्षिक करू मर्क (मरमः वार्य याद अध **নি মন্দরে ।** বিশ্ব বি वय नन्मरभव्यक्षिक मुक्षतीत विवाह ॥

|अस्ति । धन्तः भूटत ताम। भन कत्रे भूतप ११ खने शिर्क वर्त्तशाओं सम्बू किवला। इन्हें निर्देश केशि वर्षा गुरिवादत । ডाक (भा नाटखनी भूववाली स्वाकादत्र ।। बाह्य। बाह्य नास्थिनी हिनादना निक लाखा । यह क् তে ভাকে বিষয় বিষয় তাড়া ।। বলে কেবি। ক্ষেত্র क्षेत्र। निभि भाषि साथि। सद्य चाह किना स्थ ए। हा গ্রির মালি ১৯৫বৃদ্ধ বিসি দেকোন ছাশা কোখা জেঃ ब्रह्म । म कर भूकाखन न्यास (ल) एस एक द्वारा माध्या बुबुक्त मुर्देश महत्रमक्त्रमा पिनि । जाय शक्ति (कृद्ध कर्य নৈতে যাবি যদি । এই মুপেয়াপ্তেনী ডাকিল নারী নংশ। বেশ ভাষা করিয়ায় রাজার ভবনে ।। দেখি খ্রী ী কাঠ সৰে জল সহিবারে । শসুন্ধ সূহর দুয়া বছু शहलारत ।। त्कान विषे के समिति । या उरिश्व महा क्र या **लबेल पाति वरात कति शृंदर्छ । क्यान**श्ची क य नाम ख्वाक श्रांकरका (कर वा सहस्र देशल भारत वि व्यक्ति । (करवाय व्यक्ति । कर वा ना भारत करत । वतन **भागा । १३ र मंत्र भाग के जे भरत**ा मान्य प्रति से संवि कृषि द्राच-भाग । जन रेमरल मक्टलान्ड कृतिस भाग वारसग्रंक सम्प्रांक यात्र वारस्य (छान्य। मन्त्रिय। मृत्र वरिकट (य उद्योग ।। जाजा कांसा वार्क कांत्र यहा

## विवेद मुख्या

विभारित कि विव सामिक करा सब स्वामना है। योगा 💼। শু প্রাক্ত করি ব্যাভিত ফিরেন সপ্তবাড়ি স্থার সংখ क्षा हैरम महरवा। भारत खन विवास भड़ा है महाया। क्रीमान रहेन्द्र लोच कर्प। संरोध कर्मानका क क्रिक्त शिक्ष । एक्सिकान विकानमना क्षिण के किल्या **ब** ज्वारेनियं वेश्तिस में शिक्षमान । वंश्वन करत्र बंदित साथि क्या बाम में विदाह विधित्र में के को एवं को विश्वादन। मारक्षन भ्रद्धक क्षावाभाषा प्रमुशिकरणी। भरत् क्नाहार्य) क्लाइंट्रियाखें एक्नाप्यक् नारम् नर्द् रिश्य शालना उनाय है। सार्यायती याती गटन वहेट्य विरोम र बहरताहर मुन्तु चन करबन वालान् । अवस्त्राहत स अस्य भरव मेन्नेट्रें 'स्ट्रांग। अं। डेल वर्तन कार्यक क्त्रिक अटम II (मधि क्रभादात्रे क्षं K <sup>14दे</sup>न मकेटच I (कर्ष क्षेत्र इत्याह्म व्हेटला जुड्डा १। रक्षकर भाष्यकर वर्ष हिन्द्र । अञ्चल्य किया से किया के चेल्य र व्या किया न मिकिया कर्णाकिया कु ककी। मंत्रीत मुताभ काप नश्रम विश्वाको । कारम कृत करन वत एडेव्य स्वात । रेश्वय ना थरत्र (क्य विकटन (ब्रालाङ्ग । (करु वर्ष) क्य मित्र কি কল প্লাপয়ে । প্ৰব্ৰুলে দিবে সান্ধি মীৰন হিৎ भिष्य । हिस्स् कृत्स्त्र सम्बद्धाः नत्स् याहे घटनः। जन्म

अट्र स्ट्रा (त्रदेश विवेश के मृद्रा ।) कर्र आवर्श रा अभने अवशास । भागर स्कृत्य यह । कात्र व उत्र ह ना व्यथ राष्ट्री यह १३ महिन्दिन । भा াশ্যারনা কাল পেরে কাম কাপ ক্পিত অভরে 🕸 क्षां वृद्धि वन्त्र स्वाहित्याकी शर्ताः। स्वाह्म वाशः श क्यां निर्मान माह्य । जनता शाहरण क्यि त्यमन वह ण्या। अरक क्यारबन्न क्ष (प्रशिद्य भगष्टि । ७३) हरू कन्तान्यंत्र रकान्य देएक विश्वती छ ॥ धक्यती सम्बो हरेट हु खेना दिनी। बदल दिन शानरके याँ छिप्न शानक भी हो। इन रहन दारनंत्र महन रहेन (मंबा ) वस्य श्रीश वासकात स्वाज्य वाथ। १६ न्य पृत्य क्रिय वि जारल णिका दरन । शिक्ष शदन। वस्थान क स-भाक ध्र शरम् ॥ निमर्वेहरभन्न वर्गान्य । क्रिया अपन्य । अरास्थ वारक्षम अल्लो शन्दम उभाउ । वारभ मा इस वाम श वारम विवकाल । यहपुर अल्ल नाथ घटी यहा काल भाषायेन्। शृक्षिमामी जिति शरत कठ। काट्स छम् क्ष गञ्चन रश् क माहिल्। वास्ति विन भान एडिककी पान मूर्य । पूर्वत्स कांत्र माध्य म् व समय रह मूर्य ॥ महरम क्रिक कथा भन्न करन छात्र। जरक हारि ज দুরাণী স্থা নাকে তায়।। শুনি এক ধনী বলে এতো

हिट्यांक्य छ जाकात छनित्त पूर्ण गयु मुस्थि इस् শিশু কালোপত। গোরে করিলেন দান। বংগ্রেশ ছ ইবে। ভিত্ত পতির **শমান** । দুক্ত শংকের বড় যদি विक्रिया । आर्ट्स कि.कार्डिय वस द तम करान ॥ "एक विन देश्रम नात्रो जाएम समाखास्त्रा त्रशिक्षया वरण कास ना कारन श्रुवरम् । ए उठम् उद्भाव भारते समि का লগ্ চাৰগ্ডি! প্ৰতি বাদী হইলাডায় শাক্তি কাছি हिल्ला निक्री करन उराम नाकि (४ व्र कुर्फ हो। बांकिएक मान् रप्थरेम नम् कि व्यक्तिक ।। भाविकत कार प्राप्ति श्रादाध्य काल हति। बनाहरन (याका हरन क्रांत्रि हिति । अभि क्षेत्र वृत्ति वर्णना मूर्व कि । जामा क मुख्य श्रक भी त्य रूप त्या (सात् ।। कि इ अ वि स्था श्चादार्य मृत्याञ्च हरे। शक्ति नात या भिर्मायात्री अगना वहें भ स्टब्स करते जना (भारत ठाम) (कत कम) निसरि निवित्व नाने नाने बदलकुण्या वस्तिका. करन গুৰুদীৰ ঠাচা ভাৱা সন্ধ্যায় সঞ্চাৰে কাল কিবা হয় খার ৮৩ব ডাও নংখ শের নরে করে শেয় া সুত্রখন केरफ्टि साम कड रहशा क्षण 📳 वड मू 🕫 जाम भा नि चालेहे त्य काना (नार्शम्यद्विष्ठ्रात्र कद्रिरदणः वि লক্ষিণ ট শুনি এক রাষ্য থলেএকি ভোর দুঃখা

शिन्न पृथ्धे खनितम् म्यानित्व, मृतः । शिकि (मातः वि श्रीत अंशन क्षायाति। एक मिर्य हेकि। नय क ব্ৰিয়ে গোহারি ॥ জিলতে পাছিত শুনি হারেন কিব नि इं नद रशास्त्र वा कि व्यारक्षणात्री व्र अवन शे पिरन एउ তে কোৰ মতে দেখা নাহি হয়। হারিলে খালেনছু हि एमला माहि वस ॥ य एक श्रेष्ट्र निनी विभ कि প্রতি। ছারাভের ছাতে গড়ে প্রায়। পরাপত।। খ্যাক্ भिने रवरे स्मरम् १०० नक् कवि । धना क्रम धना भ র্ডিশ। শুনি আর জন কয় এতে। সন্থ (有病 हृध्य के व्याचारत अपन विशि वाहतून देवन्य ।। भिन्ति स्मान भाष्रक नक नक्षा आहमा कृत राहत गठ हुई अध्यक्ष स्वारम ॥ वियासिक सम्रक विभा त्यारम स्थाइन इन। शिल्पाविध स्वान छथा गास यनभारन ॥ रेपव 🔍 निर्मादक नाथ यसि अदन यदत । निर्मु यात सहास्त्र लाहि चान फाउन । जाकि केन लाव वर्षा जन सी বেবসে ৷ তেজ কর্মনা মোরে নিপু কাঞ্চ হারিকে 🏗 এক দুঃ ব সয়ে আমি আছি গো, জগতে। বৈবাশ ছ (पत् भूम बाहि शाहे (शत् ॥ वाम लग्ने ताका वर्त भेला ह शिस्म । अग्रंड सर्वरी मानि (करले (डा (क् প্রশাসার স্থানার পঞ্জি জাতি সে প্রায়ার । ছতে

পেলে এতিটা মারে করেত্রপুপতার 🔃 নিশীতে পুরু ভারেক্তমুবে হয়রোক ঠড়াকাছি চ্রির ক্স্যুর্কেজ্ शतके ।। (बारवायाचन वारचनाथाः वाप्यामभाव । ज नि তে সংবিদ্যে বৃতি কড়িজা দ করে। দিটেও কৃটিউইন্ क्ष हरका (पति । चाक्रक माक् करत्र भीम कार्याद्र কুরি।! ভাষে বৃক্ ধ্কং সদাকরে তাঁর। চোর ধরা ঞা क हिल्ल निर्वा वीका खाद । जुरबा स्य स्थार स्करन (ज नवार । जाशनक (माराजियाक (इस मान) श्रीत (इन बरनद अरम शामात क्य वान । त मोश्कि विभाग ।। भानि अक ध्वीकट्र भानिएन। किसे নী। বলিতে ন'হিক পারি হঃ খর কাহিনী।। অপল वि रुट्य क्रिनाम अकिन यादंग । विवाह केविन पुने मिहे सम्दारम् ॥ भरजनीत ज्ञारम निनी करण निहासि वि । विराद्ध कात्र्ड (एटक विका व्यवि ।। मग्रू वित हा यन इरन श्रवानिछ। पाकिएरन (मई सरन इर्ग दि পরিত্ব ৷ বাদ করি অপরাদ করে গো সভেনী ৷ কির किर उ नाहि (प य अनिट्य समनी !। नर्मधः कः क् कट्र न्भारतहत् कथ्य। जिल्लाक अतिरम् काल मुश्यारप स मरमा। यामि (यहे माश्राह्म हरक राहेत लिक पना महाय अरक्षा विदन्त भा के हिंद ता वाकि ।। स्थानिकारी

লন কয় মোর দুংথশুৰ বিশুক্ষণ কামার পতি হালি ন প্রধান টাং বিশিক্ট সন্তানের বিশেষ পরিচয় : খ্রি वाभिएक मान्निमान बद्ध केति करें।। विवाह द।दशी ভার মুনফ। নকলি। নিশী দিকা খান ভার জীয় গাঁ লা শালি 🛚 বিকাক করি গিয়াকে কান্ত বৎসর ৪ম 📑 कार्याध्यस्य व्यक्तात मध्य भागा एता ११ कननेत्र देशक् (वाज किया जै। का मुठे। व्यवः माना चना छ। एवं किएड इत्तान है 🐧 जिल्ला क्षा क्ष सम्राह्म (एम्स मार्ग्य है ব্যেষ্ঠ হ কটেউন সামি কেই তার কালে দ কলা প্রা ल (एड वृत्ति नीहि नेता भात । श्रेन मि बर्टनह भेटन यिनमें वास्त्र !! चलातित्र काना एटर्स नाहि मिले १५। कि कुल्म (म कुल बात कित बित्रक्षा। नित्रह व क्या नल प्रकृतिहरू स्था । करत्रि किकित सारक् मुक् विक तथ ।। जामात मुहित्य काल। भाष भारत थन 🗜 डेननाडित कामार्ग इहेरव नम्पन ॥ भ्रायत विकास पिटेंड चामित्वन नाथ। शास्त्वन धन-चार इहेरद भी ক্যাম ৷ এই এপ ক্রপণীরে পতিরে নিন্দিরে ভিক্তি ট্ অন্তর্গর্ম পরেরে হিপমিয়ে। দ্যভাইতে নান্তি गाउ कारम खद्भर। जीव क जीक के बादा दरन बद्धर । है 11 & Bay March Story

ाभवाजी बाह्यत् ।। । । । । । । । ्रियं जिल्लामी सं एक्जिएस वाजन केली छैथानिया काम स्मा रत्न विशि विकास अधिरका । आशामित कि मा মুক্তি কেনো চেমাকৈ লাভাবি, পাগণ ক্তিত ব্যুখি পঢ়িব भुक्षकीत काण्यमस्य निमारवात यथे। नका खरान एस अन्य हा वा व्यवस्थित अप उत्पर्ध है कि वा है स्वा माना भाग है। শেলার ডি পভি কাস্তরদায়। র ডিজিয়া ছবে রাজে এ भ्राम्भ त्य मुध्र (सरव छा विरय श्रेम विरम्मन विरम १०५७ सम्मान क्षेत्र (कन साहि: टेह्न स्मायः अपूर १० विश इ सिक्सि कथारन कशन शरण ना क्रिकाय महायारन मानीक्टम दक्षि भाग । (कश्क्य किस्भारत, माहे व इत्य छक्ति, इ. म अधि माछ कति कास ।। यह प्रक् वास । गरा, मुझ्ने, स्ट्यु का साथरान छा ला अरः ; क्लेल ज वात । किटलासा तरक् वाला जिलास (वर्ती विन्तास, के स्राय क्वदान जानाव ।। करती खुदन एउः बाद कार দ্যা বাজ্জতি হলেন সবে দেখিতেই ৷ বরনের ছুল্ড ই (छ) कि हु नोहि तम शहर , गहर पणि नाबिर हरता ह ইল ভিনন দায়: কেছ রাণীয়ে ভানায়: স্থান রাণী আ ইল দেখিতে ৷ সহার নভাব দেখি; মনেং মহাদুঃংী **डाकि मध्य (उदिन प्रतिदेश में श्रीय दादका समाध** 

ENG

हा, जिलास वक्त स्वत्या, वर्षण भारत कन्नता वन्ना वि প্রিরেং সবে মেক্ষি- হয়ে অভি আইক্ট্রা- দাংগ্রাইক র (त्र अवन १) क्रिंग हि अभि हा भारक्ष रहे शुन्ह माह कांचि मुद्द ब्रह्म कां शांखां ताना कानि मनाभूनि, বসংন ডাকি জালনী, রাখিলেন বরুণ/ডালায় ৷ বৃত্ত मात्र भी श कालि। सभारत्र स्वारण स्वीतं अस्य स्थान করর বরণা কেন্দ্র করে উল্প্নি, রক্ত করে শৃৎ্থ স্থ नि स्मी भण चल्हारस्थानम् । अश्वतात्र रविक वरत्, स् बिर्ड करन करते: सरत क्रांकी अनक्रमा थान एक स (व भर्मात्र औ; .(२०५ वर्षनी क्रत्य औ; व्यक्ति व्यक्त ত্ন-সাবধান চাইত মধ্য কন্যা লয়ে: কলো সংঘটক গিয়েঃ ভোকে ধরি যুঞ্জী আনন্য কেরি এতে ছন্ন उन्। वपन कविन भागाः भूडएसे किन गुरुवन नी লকবেতে করে রক্তিক বড় অসম্ভব্ন বর্হতে ক্রম্ব বড় হয় ৷ বিধির বিবিধ মড়া জী আছার কর্ম যুত্ত, কু शोभाग करम जमर्भभा। इव कम्या जटम सालः व्याह सामा इंड्यामाक्ष्म नितिस यस शाहे , विभिन्न वि ধান মতে: সমাপয় বিৱাহিতে: অতঃপরে শুন্যার্ वरहे ।। बाद्धापिकं भूदताहित्यः वत कमा नहत्र त्य २७: यथ। एट्युट्स दाजक-जुल्हा। मुख्य माज मानी अस्य

## वनेनथ कुलवार

हित्रिक करत बरन अनिकृति निष्य कर्का ।। नजनना कृति करने, नर्ध या पुरे करने यथा इस अभूम वान जा क्लाकना घटण पनि, पाटम कर प्रासीतिक। इति विद्या मुग्ने सुग्ने ।। अस्य नाम आ नसक्ति। याँचेशाम ।।

प्राचित्र हमा। जनकार गरिकार।

प्राचित्र हमा। जनकार गरिकार क्रां क्रिकार निवास निवास निवास कर्रा क्रिकार क्रिकार निवास निवास कर्रा क्रिकार क्र

ফিত যেমতাগো কাদিকাশ গোবিন্দ বেকি যেমত গোলীক।। ক্ষত্ৰ বেডিড বেখজপন্ম মাক্ষিক। মিউ বেষ্টিত যেম্ড পিপিলিকা ৷ তক্ বেফিড শোভিত যেন পত্ৰ। কয় ৰে ফিঙ্কংখনৰ বৰ্ণাক্ৰণাঞ্জনত বেফি उ रुख्य भनाक्षमा।। कोस्टरक क्लेस्टरक त्रादशं सर्वस ना।। (करु कर्स अनि मुहल-माद्र (ठानाः। (कर् क्य বুরে দিওন খাতনা ।। কেহ শাসি হাসি ই নারীরে वरम् । नाटक इन् इंट्रिंग त्र काटन फिट्स् ॥ भर्ठशी গণে বাংগ্রায়ে সমধ্যে । চামর ব্যক্তর করে মহা মধ্যে व्यक्त व्यक्त कर एक अरक्। श्रामा अतिशामा की क्षक श्रमाक्ष्म । भिक्षीम विविध आनिएस उथन । वह क न्।। द्यादक कन्नाय क्यांचन ११ त्यान यभी आर्थन आकृत क्षृत्र। स्टामाण्ड मिल मुद्ध मुम्पूत्र ॥ त्र हामा हत्य কেছ বাবে কিজালেন সকীত বিদ্যা কিছু কি নাজি এ ल ।। खनि रक्रचंडश्यत दर्गने दमी । निश्वतक विकि हुरे बहरि ।। छनि अक्निदेद जारन यञ्ज य**छ**ा जक्ष ज् র তান পুরা শ্লবিত ৷৷ পাকোয়াক মন্দিরে আঙ্ টো বিবে ক্ষেতার ভেডার আরু কড কেনে।। যান্তেই শ্রু। করি সংব সেলি। গাও দেখি রসরাক্ত ভাম ত गि।। তানি রায় আরডে খ্যাল পুপদ। মৃত্তি তুইল

সতে শুনে পদা। অনুসাধাকরি র গাওরাকরি। উপ তিত রাশিনীয়ে সংশ্রেজি । তাল মান হস্তথান গ্ নানুহথা। পুনং রাম ক্লায় গায় বাতি সংখ্যা।

ः अव्यक्ति शर्प छात्म भारम् भारम् ।

मत्नी वर्शमानी वकाइरपानिम्हत्त नाश्यिमः । (नः वकामरन दर भरनः कदा वर्षम्यपिकः न

জ্ঞিত হয়ে কজিজি বজিজিত সে সাবে ম

্তৰক হৃদ্ । সানন্দ্ বাগরে সাঁভাগ্নে রক্ষী গণ্

्रक्त नाटक (कर्णास उप्राक्तिय वजन १) (कर्णाति व्यक्ति कात्रम मृत्या । (कात्र धनो वासाय विस्ताय तर वर्ष्ट्र भन १) (कर्ण पाय भर्षः मृत्या वस्ती कीर्यकः) व क्ट्रीट्स क्रवावनामाहि व्यक्तिय । क्रिक्स बाह्य

भी उहर द भने खन। नर्सती (भा**हास ख**रणे समात स दन ११ (हन कारणभक्तल करून नितक्त १) लिसिस करें त्वा बन श्राकां उनक्ष ११ जाकर निकृत करू पाड़िकी

র হন টেউদয়েতে পূর্কবিধে করেছে গ্রমন এ বিধারি ত হয়ে সংক্রের অংশিকন চপ্রভাত হইণ নে ন পূর্ণ

कि नन्त्रना जानागण आदकाशीय विक्रण वपना भारमा

पं श्रहेंबाके विविद्देश निवाद शास्त्राणां हो छोड़ा हम। क वि नहेटभारे इन्। (यनानी मामीया श्राब्धाः हावि निশ्हानन ॥ सर्वाछक। कतिएक स्टाइ वास्टिय छ धन देशन धनी वदन करत इति मु। रलागा । त्यक कमप्राक्ष म शास कितात यक मा शास के करवार वारस यास का बाजन हिलाने क्याय कालि दिल एउन्हा सान कदाई व स्टबार् साम ए जना शक्रे वाच शताहैश आह তে তথন ৷৷ প্রোছিত খানি করে সত্র অধ্যয়ণ ৷ বি समाधुन्यादत सादत मुद्रिक प्राक्त ।। कामकात कदक स्दत्र शुबी नमार्था। इत्रवित हाला तानी सह वस्त्वत विकास विविध केली ना एस वर्ष र । उच्छाइ का पर त्राणी कत्राष्ट्र (जासमा) व्याक्षत्राहर ७ एवं व्यामात्र भेशी भग । शानाव्य विमान (मीवल विमास कालगा ।) मुशीभरम महिष्याम वाभिष्य उपन । ७७ स्वर्ध चरकः করে চামর ব্যক্ষন ।। দাংস্থাবলে এত ছিনে পৃত্তি ভ भागा डेप्पाणि एउ उटन शमरन छवन।। वाच अकरता विषय । नम् जिथती । चार्षि श्रकार्गनः बाद्र वज् वनः श्रीड বাদি প্রয়োজনে। করিতে কলগ্রন্থ করে বিভাগান त्रत्र कन्या स्थित्। त्या करू पृथ्वा क्लि वास्ति ।

क थरशु चानिकाम करत्। ताल प्रापी श्रद्धः सानि काम करता वाश्विकामी निरम्न करत्र १। विविध प्रक्रि क्रम अ हरू कि। वह क्रमा करत याता। (एरवन महिर्दे वृश्विष्य श्रिक्ष, निष्त्र रहना राष्ट्र श्रीका ॥ द्वापी त्रामात्रात्रात्रातम् मध्दत्रां ज्ञामसे स्टार्वेषस्य । क न्धात माग्राहकः लोकाक्न हिटकः हास्की तरहन हो। भरत ।। व्यापि किर्दा कार्यन (क बाद अखारक, बाद বিয়া পরে পলা ৷ পাঠার কোপায়; কমারী ডোকা म्, इहेटन या भिष्य वाला ।। त्रहिरवा (कमरन) जुड़ालि (श्राक्षीकरतः जीवन त्रश्रिक (मटर । किमरन व्यक्तिकः कारत (भा जाकिर्व भा वनित्य भारम (मट्ह 1) कुछ कित्म भाग, (ए. क्षिड कतित्व) हृष्याय होष भूत्य ! धरमा बार्श वा दरन ७ कि. में ; खने भान हुन भरव ए ज हेर्डा अभावीरे तारी, कारण कितिरे ज्यान हरू फाना हा ता। जामि मुक्ती भएगः विद्यम वप्रतः वाँचि विरद्ध छ। ষে ভারা।। সুপ্রারারর করে, ধরি পরস্পর, বলেপ্রীয়ে व्याजित्व करवे। करव (मधी भाव, हरवे भुभ हे हा स নে দুঃপ দুৱে যাবে 🏻 মায়াতে মহিতে নুগতি তৃতি (७, विमान (पचि नवात : कतास (तापन) नसदन कि दन, यदर वनिवाद ॥ वटल सभीधाराः मात्रह सन्मदनः

कारित स्थानिका छत्रास । किन कर्त किरल श्वाक हिंसि किरल स्थानिका स्थिति व्यक्ति स्थानिका स्थिति व्यक्ति स्थानिका स्यानिका स्थानिका स्थानिक

. वाथ वंद्र कन्त श्रहण शंगक ।

गालकान । खडान्य राम्। कत यास कारवर । कर्स गमा ममान स कार्स हाता नारगा। कारक हाक खले गम बाद वारक हान । वारक हामा छारम लोक कर् व वारक भोग । वारक हिंदि जरक छिंदे छार कर्स गमा भाग थाएँ एवं मानाक कार्किएक विशास । ख चमक्ष च्छात्रीन

जात्वर । । वृद्धिक अवस्था । य वर्ग द्वा व्यक्ता (हो अति । ब्राह्म, निस्ने क्ल क विकास स्वास्त्र में असे का साह শুরুজার শু উহ ভোরস । চেন্চায় খেনচায় কল বাস লক য় টেবফাল দেয় ভাল বাজিছে টিকের 🖟 क्षर (इ.चि. (म. अनुभावाधा मन्द्रिया)। अने मुख् ५३ भक्त बिर्म् यास्तः । सर्भगति गर्ने गर्ने हार का भारता ।! क्योपित्त कोकार्यात्र कारक भारत धन । चर्चा ५ कि अवहरत यस्मात्रत्ते। जिल्लाक हे तमाब एक ভিত্ত যায়। কাজাদলি কউঙলী আগেং ধায়। খাল श्व किराकृत वहा राष्ट्रभव । सम्य सम्य स्विक নেল করে সকারের গ্লাকের বা ক্রামের করে প্রায়ে বার্যাক্রাট্ট र्श । देश साट्य नाकि क्ट्रिश स्वाह राष्ट्री हर्ग । गाउ ह अभिवा नह , एभिकास भारम । (कर्या इत्राक्षा वह क्षरांद्रमत बाह्मता मिंड ब्राह्य विद्रावरम् बार्न द्वास्तरभाव खर्भ उ मनगथ भागिरह खरान । स्वी विकासरमात्नाका नरेट्य कामिनी। दानामान्य प्रश कारक की लिएक स्वरम्भी १६ छानि द्वारा दहिए। स ल्डि व भन्नद्र । विष्युवक अधिक्षत्र अध्यक्षत् । कारम ছাড়া निक्र शाङ्ग व्हेल समात्। क्छे हिउ डेलालिंड भाषन भाषात । अवस्ता एकरणारने करक यमन्

शामि ख्रम गाप्त करण (मनावार में उसे श्रेण विद्या र ्रायाक्का कांग्रा चरत्र महन । वस वारम् वा क्षेत्राम क उ कुछ तरक ।। कनरकरत स्विकारत गाहरस करा है। पृष्टे सहस् क्या करन क्षणिएक स्व शालाता । क्षणा महत्त्व हर्ने क्त नंत्रकृतकर्षे प्रास्क्रका ज्ञानी खरव संशी घरण साठी बांक श्रेक १६ (क्राइक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्राइकेट व्यान्य स व्यापन १ क् इक्ना पुनि कदन बन्नादत शंभहनः १६ द्वाभागावेश रिप्रके क्षा कर्य वर्णा अप ६ धनि केन्द्रिन प्रियं अनीमन माजः भारत खेळर सरत सरत सरस यासा आहे हाँ हि কে নারী খোলের যে রায় ।। কড়ি খেলি-জ্রহালি উ अग्र विखर । अरेक्केन्टक (य त्योनिक्वेन्स्टिस दिस्क वटनामादम व्यक्तिकादम हासा बातताल । विस् नाह्य है। इंडे महिड काथिनीय वाम्। करत्र म्लल्द्र कर्ड भूतकात्र । गुःश्विकास विक्रहाग क्ष्मान शतकात । हि बदने अस्तराह जरभ कड मेंड। संग्र मान (य या होन मेरनेटजर केल ।। विकासभा नाहि भना भामिए भागा र्धि । शिटिश धन हर्य भग रुख प्रति । एक ना प्ने केरिया एक्टम कविरम् मण्डन । अन्तर्**टम जर्द स्टम्** निख निदक्त होन ११ तम् क्या मुस्थ हश् विव्रह् स्थारन १ नि শাঁপতি এলো গতি তুরীত গমনে

্ব পৰা গিডাই লাছিত সনসংখ্য কুখোপ কথন ঃ अश्राप्ता व्यमना द्रवनी अव इन्हेर क्रार्टिय । शक्ती कुन्स्टब कट्ड बट्धाएक क्रिया । अवबद्ध अभ्यक्षिक साविवस्य । अटन्टा एक काला मुख्ये क ति ज्यास्था न क्षांम (ग्राम् १३म भरम (ग्रांस द्रमदाया) विवाहक। मि भ क्या करिएवं व्यामाय ।। स्थानि ज्ञासम्मूम् दत्र करिए क्राक्षी । मुद्रां नगरत्र थाम मुरत्स वाणानी ।। द्राक श्राधालक करकचंद्र करते त्राक्षा । जासात्र मृश्टिक मृश्व द्वी बाटकरक वर्षा ।। । अपि नह एस किर्टियन नाम भरत महिक श्रद्धा अवस्था करण किया हमारत ।। भूतरण अध्यी अव बाह्यमिछ-इसः (कर् कामि समि प्राक्त महिदि रक्रकन्न । वि पर वृक्षास वाशी कतिरह मुक्ति । शृहादक পুঞ্জিল ধাক মা আগু বৰ্জন 🔋 ছেন কালে স্কুত জঃস্থি करिए क्षेत्रातः। ज्ञानः बाल्डा ह्रद (२८७ वास्ति हरुपारक ।। स्थान ताग्र काय कुरु लिकाह विकास व श्चनित्रा माखाहेश द्राप्ट कर भूष्ट्री। (पवि जून उ ন্যেরে ক্সিক্তানা করিলো। কাছার দুছিতে সেব বলি (संक्र्डेज ।) (काशाशाभ किया नाम कास्टिस्ट (क्रा घहि हिल स्थान स्थम अहे विवत् ।। खीन बाह महिनदा कृष्टि भिजादा । मृत भरन्। पटक यारे सुवाहे मनाव

क्षाम यगील खुल कि जुदल्स सास । जाइस समारी को अपारम सामाया। यहेक इर प्रचित्त स्व कि कि । बेते । जाद महन सामाल सामाय विस्त । जु लेकित लूथ (महे मुख्य विस्कान । एका सामि सन मेली जिल्हित गांकम । (महे मुख्य में मारत कि कि मिना कि कि मिस घट स्वापी ना कह महम्म । स्विम मुख्य क्रमाम श्राह्म मांगहत सुल स्वापित स्व वरहे पहेटल कि कि का । स्व इन मांगहत सुल स्वापित स्व यह महम्म अपा देकस सम स्वाप्त । मुद्राहित स्वाब यह महम् अपा दिस्स । प्रस्त का क्षा मिया विमास कि निम भाग प्रमा विमानी ताम स्वाप्ति क्षा । यहना मांग भाग प्रमा विमानी ताम स्वाप्ति क्षा । यहना मांग भाग प्रमा

व्यथ बुक्षतीत क्र्य ।।

্পুত্রা। সংঘটন সভাপনা যদি হয় রে। আনন্দে ্আকণশ করে মনে করে রে।।

हित्र जिन्ही । जनम शयन करतः मठी (पशि सन बर्व निव्दा वाप करत् करू काय । चाननात निव्दा कि इस्य चाननी सामी मध्य करत चित्रशास । विश्वत के इस्य (पश्चिः मरमर महा भूचिः कारव चास नाव श्वान हारक । (प्राप्त क्षकात् इस्म, सम्का वित्रशानकाः

394 करिताका करियोक (य मुका लिए) है डिम्हान है। के जिल्हा भारत लड्डा कार्र भारत मान करता ता वा वा মানারে গুণার ওণে: কতকার মর প্রাণেদ্যালা পেছে काल क्रमान । अटन कहा है त्या मृत्य कि में मू दर्भ कि रा युधा वीक जिल्ले नुरक्तार मान्ति । अधन शाहाहि কালা জমি যোহ সংখ্যকালা কি কলিৰে এটায়েছ ভি रिकारि हो कीन रिवरिंग खर्म तार्थान विके क्रांच वसुप्रान, का लियोग हैर्रि जिन नेही। रिकाणी एवं में लोगी लायेमी जानी स ছ স্মির্ণ কলেইণ করি আন্ত ভোইটা সেখি দেইর অসময়, বিশ্বহাজণে সদয়- হয়ে করিতে যে লহায় ভাগ পোষে ভব স্মিরণ,মোতে কবিচ্ছা দাক্ষা ভব न प्रशाहिनात (कार्था ।। अर्थन कहिरल किंका कन शर বে সম্চিত্য না হইবে প্রবল কাউণা কোথা ভয়ে ম

भक्र हाला जान शास्त्र करा नेपाकर वशाक्राहर सेन हत हरम हरता (कार्याः माने (में स्थिह बाबकाः (बहेबान অপমান মবি। কোথাবে ক্ষতিল কলে, আলাংখ্যক फिन्कामा निकाल गाहि सावि । कदबास क

लग्निः कडित मा शतत शाहिक कांचियांनी इटन उप পর। নাগি মোর কে সময়, ভবন কণ্ডেছি স্বায়, প্রাণ

লাঘা একে অভঃপর ৷ প্রকলে এক্ডা করে: বির্দাণ্ড

र्नाहरू म् स्वार्ट

का बहुति राष्ट्र विषय हिरम (पश्चि विज्ञ विशी) देश (अ) भरत जिल्ला अहि भाग मुख । एखिराना मुखि एस् क(क भग्न क्षाकी ।। वैजि मृत्य स्वक्ष, उक्तरपद माम न बंगार उरहे, उसकि भागामान इरक् ।। आहा शर्य ना পোৰ্বর একেরীটো কাম জয় ছেট্ড ফারে ভোমা গা जुक्दिनाता समित्रश् रक गाइयः रक मिन्द्र श्रापादयः नोश्य निसंद्रिकात नमस्य । मोश्य हरका देहजाद्र हिन या मुलिक कि ते मुक्त भारत रुवेल वहरत । कि भारत एवे दिक हिन्द्र भाषा अवस्थित । स्वाप्त करता । स्वाप्त विश्वा खामिक मृताल्लका पोरन ग्रह्माका नामान जान ন হয় ম য়ে বুবি অব্যয় খলে পরেবিভেকে পদায়কজন রে; মাতকের মতক উপর। নাছি দোব ভেরম্বরে नर कथा (नत्र एक इं तिथि यहम जिन शूर्म ह्यारी प्रहे श्रदेव इन्हें अन्या, फ्या कृति प्रशासका खरा नाहि कृति: মার কারে। এপ্র সদয় হরে। নিদ্র ছিলে: বৃদ্ধ সংক্ वेद्य मृद्ध (प्रिथिश्य जासारत ।) अहे संख् उरूएम भूगीए शाहरवा नाशव सनीः धन्मानि धालने अखाव । विश मक्तांत्र शुक्र क्यकि प्रदेश मुक्ताः (मह म्राल कात्रः कित करिता। श्रमाण वा इस उद्देश (मधर विका द्रावा) মা ছাগ মুগু ছলো ভূমুগুলে । ইয়ে ভির্কার করিছ

भाग पिरमा सक्तर्नीः काम्रा छहानि क्रांड यह (प रणा। नर्द कितकात्र करिः याद्वाम निक् गुम्म मीः छ। रद वाह्य मृष्ट्र शरमः जीवृड की लक्ष्याः भागा यमि वृक्षं स्था छर्द स्कदा थार्क केम्यारमः।

्यथ घनमध्यत महना पृष्ट । चूहा । यो पृष्ट अभि नमा बाराह अहमा स नाहि । (७ । श्रिडिक: भानन दिरम्श्रम् एम् किम्डि

া বলে ধরে নিলে রতি, বজ্জাদিবে রস্থী বিতী, বি াকিসে যাবে ও দুর্গেডি, চিন্তিড মনেতে না

अस् हड्म्प्रिशः कक्षा गार्यः धानम स्ट्रिशं विध् भागम्द्रसः इकेन (संग्रितः) मर्कती वास्त्रः भग्नम सम आ जेटम (एथ इद्धः मग्नन नाष्टि।) नक्दन से स्ट्रिशः भा प्रम मनित्यः समानित स्वाद्दः स्ट्रिस् भग्नरः । स्वितं वस्तु नारतः समानित मार्थः अम्सि साम्रादः नाष्ट्रः नाष्ट् वस्तु नारतः समानित मार्थः अम्सि साम्रादः नाष्ट्

গণেঃ কখন নাই। হয় যে বজপঃ ময়লার খুপঃ কগে ধন্ত বিশ্বপঃ হেনি যে ডাই ।। সুখের কারণং করি থ নেবণঃ পেয়ে ফারীখনঃ না হলো ভোগ । ফালিল না

ক্ষাঃ শুমের সক্ষর: সক্ষি বিফল। যে কর্ম ভোগ ।

बाद्य वाम विधिः कि कद्व क्षेत्रशीः मदमस्त छद्वाधिः

an S

(अ (य किंदल ) कार छ अप जन्म सामरण भाजन, ख्लु ह (क्रमपा बरक् स्क्रिंस !! अर्थक करना बाह्य देवन चे ভিত্ত প্রতিষ্ঠ অমি। ই ছৈলে ভঞ্জন। ভঙ্জিত যে छात्र, ছ∈लएक क्षेत्रवायः दक्ति हिंदी बाराः **य**त्वात्रक्षके भिगुकारन गरि, हि ने दिसम्थि तिदृश् खाला कि का उ या भरमन डाङ्गाङ रशोहरटी भगकरञ्चलको धार बार छ इंटर निवंक सार्व ।। जानवात नेप, 'आनि लानक করিবে যথনা ঘ্চিটে জালা। সাধ্য যে আমাজেলা ফিক্তাহাতে,পালন ক্রিতে,প্রতিজ্ঞান্তর il আপ্র देखा य- जनम वंत्रीय नगंजित्य डाङ्क्षिमार्थ (नगः। व । उद्य छ। इ मत्यः न द्व त्रि त्रामः यू छ। द स्वभत्यः के ला निरादि ही अभन त्य भग, मा श्वास क्यांच, (क्रम (न लाजनः इहैरव छ।दि । दङ्बंड भन, करत दङ् कमः ने। (त्रि अभने (र येग्साहि । समस्त्रासनः कर्त्र हिन शनः विवाह कांत्रन, गांकानकित । जगक्रिक (ध् अने वृहर छ। धनु श्रीक। जादन मिन् के दिनु दिन ।। की ड शक कानि, मुन्दिनी (य धनीः लाख्द गृहिनी।क्केटब्र किंग। मुनप अधानः कक्ष (छपि भगः किपिएन सि क में करता अभिन्ता । लिलिस (रा बन, माहित एन स्क

व्यामात्र यसमा विकास स्टामाः काम । एक शहर भारत (इ भारत, भारत कम्यादनः भरतानीभारता । व्यादात्र हिं स्वयं व्याप राजी नाक, शहर शब कार्य गालि (ज भग । मुख्येति आका, (भाषा श्रीकिकाः एके १२क ভাষ্য করি গোপা 11 কেমনে মে জনা পালিতে হ लम् कद्रावि महाम सामाय छात्र। सा म्रावदहेन पति (ब) म्बर, स्वित् सम्बन् वाप ककासा, विम श्री दि (मः मुक्कतीत जरमः महे ति ४१म, खालम वटन । क हिटल क्राप्त, धनी प्रिंद लाख, अश्यान काक, करे ता कूर्रेका । बाद जादि बर्ग मा भावित्व भरन इद अर्थ वटन, नक्टक श्राम । केल व जक्की, नः क्टा कार्यक मारा (यम होते क्यूए) विनाम ॥ मार्सिक डेलाय-क्षणान अपाए। पार्य ब्रक्षा शहर कृति एर मात । र (व करन व्यनक्षानं निधि मित्र क्षानं स्नित्य व अक् अपिशृह करम ॥ विरन मृद्धी भरिका माहि त्यात शकि प्रक आव प्रश्नीक क्रिय पृत । (महे बाव प्रतिः प्रश कति इति, निरमान मुख्यो, सन शहुत । कितिरम मा क्त. कीति विश्वभया, व्याष्ट्रन अपयः खरिक भरता वि (क् इ। वि वीत-कटला सक् निमी, निम् (मटड वा नि शिक्षिक करत्र ।। स्थान मन्त्रिकः याहेरक सामारकः र

इतन्य अस्ति। १ फेरकरेष्ट्रं स्थी । स्य विभरेन ऋषि, यथि। गाहि रहाहै। बाला भारतरही, नाहित रहाब । गुडाती मह क्या अकारकार्यक्रम क्रांक का कार्यक्रम ने कर करा। मुक्का भाम अला साव कि भा भाग, अर्थन मा ग्रमा करेल वर्षा है। अक्र कर्षेत्र लोक्षा विदेवर चार्रा, व्यात्कान मधायुः शान शिलामी रेम वर्ष अनः द्वीस द नमनः (करण क्न इसः (भागांडि लाकीं। खेश मुझारीत अस्थि बनेबरधत नित्र भी पिन जिल्ही। तासात्र संभारत उपकि समय पानि त्य जबीहरूव भागा कड़्य लानक । श्रामित का গীঃ সংগ্রীর কাছে আদিং ডিজ্র বিনাম মত্নার্তক (कर् बाक्षम स कि: तर्क्श्रिएस किल कांक्रीः कक्रि उत्हेटम व (करू वारमा ।) दर्भ जिसा सथल्या करते हिन सभी वर १३ सम्बद्धार् हरम् शम्य १८म् ।। समात्री केन्त्रिन स्व कः । स्रतिश्किगाय माञ्चक्तं भाजं (भाजे (कृत्स्तन् বর্তিতে না পারি আরঃ বুক ইতে সজ্জ। ভারঃ সোগা म (माकाम) विमानेका। तु।कारण देवकर कृत्वः (मा ति । ह यो कि विकास को मिका छ। राज एय द्रा । छ कि विक व्यवस्थानीः वृक्ष है एक अवक्षानीः क्रमना ना (क्र् क्रमना ना क्रमना क्रमना ना क्रमना ना क्रमना ना (क्रमना ना क्रमना ि किडी यास ।। सर्छत्र भागम् भतिः भूत करते मू

নানীঃ আন্তঃকালি কছে স্থাপত। যোগায় ভাষ্থ্ৰ 近次(養女司 登録表 資産法 (会会 金式至 2012年) 近 超 m fl (मध्य न्तिक्ष (स्वः अत्र भिन् करत् क्वर् रकानक ती वहार कड़ अहारे । (इस कार्या समय पश्चाक व्यक्ति विकासिकः कावेरलम कृष्यति निकर्ति ।) (क्रिक्किन स्व उपस्था श्री हुनो त्यां ह सर्गत्यक सुरम बार्ट्स (कार्ण চন্দ্র ঢাকি ৷ কেমনে রাখিব পাঞ্জেন্দ্র করি শ্র नः निरामिक्षणाथ नाविक्रासम्बद्धाः क्रांक मकान्यदि भरनः 等物的中性情報 [13] 医1950亩 [16] 下报日 李初 图第三十三 बन सम्बो (मेंटिकः साजसक्ता विवर्धः तरह किए-व (क् कालाभार ।) सची भव भाकि मृत्याः ठाष्ट्रक (सामा य मुर्वकारकर प्रय करा व सर्व । (करु क्या जिल्हा) বিং রায়ে দেয় ভরাকরিঃকেক্করে কৌয়ক প্রাক্ত हकान धनी (बंध अद्याः स्क्ला हन्स्य हुसः । करण शहर करत्व (क्या । (कस्व। काष्ट्रांटन सरतः (कस्व। काम्य कारतः कृद्धं मार्च मार्चन् न। छन् ।। छन्तनं भीरमञ्जू वार्षाः क्षण्हि जनुषाकारभः इरम जारम खेळाचूत् भन । स्था राज अरखवड़: कार्य रेश्न खुन्नः शक्यान स्रिनित्र सम्ब । अविभ्ल जनकृष्टि माञ्च इटल्ट्ड छात्रः यो सर शुक्रमाञ्चलको मुन्छी साक्ष्म कारहः कार्यस

कर्ण वीरकः भारकः कि उत्ता मदस्यो व्यक्ति। स्मान ভাবে: ভাষ্যা সনে থাকি ভাবেং নি কাভাবে রাখি क्त आंत्रका । क्या त्य या हे आएवः वात सन ना क् मारनः जीवनाहरू त्यानामित्य मायता है। मानि नी কিলে থাকিকে দায়া কে চায়রে পিত কাম: কাম : नान जन कार्स का प्रश् (६७न वेहेरन कार्य क्षेत्र) त्र नाईक डा दवः अद्वनः २ (हम मास् ।। (मथदा नाईछ) বিশক্তিঃ অক্সংগ্য করিক গতিং পাশা থেকি হারি রা र्या धन। ना त्रिट्या एक पिनः पिनम्यि पिन दिनः अक क्रम कदिएला निधन ॥ मिराकारक माणि किक्ता श्रां उद्या क दिरवा दक्षाः उष्ट् नादी नण मा कृति द्या ! क्ल बान त्य प्रवाधः यपि करत भीवनान्यः जारत छन् किराना हास्टिया।। পতি स्रयं करतः क्यां भानय সভীর ধর্মঃ আমি এঅধ্যা করি কিলে। জিক্ট জনারে কয়। ভোমার একর্ঘ নয়ঃ অভার কি स्राक्षा यव त्याहम ।।

अथ मुक्कतीत्र इतित्य विवास । धुत्राः ।। आस आभात्र इतित्य विवास सहैना । असनाथ निशां जातिक जातना ।। भारम सा

ा कि हिना भागः विशेषको में क्टेबन की मान के बार की गाउन ं रब क्षीवनः अधनं भवना ।। 🖰 🖰 🦟 क्रम्य वामीका । स्वयंत्रकः। यसभूषे क्षयं के श्रेरवाहि वाष्ट्र । वाद्यकी शहर कर स्वितिका क्षय । वाद्यका ব্ৰহ্মতি ব্ৰহ্ম হাবে আৰুনানা কেলামনমালে ভন্ন কলে নি क्रीएंड कि बादि । सर्वे कविश्व का एक श्राद्यावय वर हि। अञ्चलिक क्रणविक्र कविता स्व विति ॥ कन्मर्श इ एर्ज छट्छ बार्छ भारत मांछ। तिनस क्षित्म नहरू क्रिंच में कि ।। अध् करत शिक बरत चिम करत खुनि । कंतिरता जाद्यत मध (मधिद्यम धरी वर्ग मध्यम् । भदम যাদি করে সমারণ। তবে করিবেম স্ভারীর স্থানীরণ অমত মনমথ ব্যায় মন করী ৷ এতি অন্যণের্থ কঠ রতা করি ।। নম্ন মুদিয়ে ভাবে বিধাতারক্ল। কেম ला दक्षिता भाव। निभी अहे क्षेत्र ॥ अङाङ हहेरव क् ধে ত্রিকাল পর্বর্থ প্রদানত হয়ে রব আমিলে। স र्क हि ।। भाभ रहेल भक्षती करहर कुलवारक। क्यारह यर्थान। यात उर् कुलवार। ॥ (म्वीव याद्याश यात नः हानिल गत । किन लुगता गत्व का छ रेकन बत সেই অবসংর ধীর অবসর পায় : নিদুপেত হলো ম ন রাখি বিধি পায়। ন্থী গণে,গমনে নিজং মনির

(अ) निकट्डे वाश्यक्त एक स्मिन्स सम्बद्ध । भारत 🛍 ন বিবরণ সকৌস্তাইক জাবে ৷ পাত এলে: বধে সভী भुध किरत खार्य ।। मरदानरत धनो नवद व्याम्हि (का পণ্ বিজ্ঞাত হইতে মনে করেছে পোপণ্ । এখন মান্য সহা পতি সঙ্গ করে। সামী ভার পণ জানি রা िशाहक करता है समाती एमिएएए काएस देशन इत কিতে। বির্ভাবন্তানা অনোর মা হর্তাতে ম কাখিবে कब्रम् जीस मानी छ।कि वाटम। चाउट मा सद्द मा। क ब्रांड जान बारभ ।। १५४। डे किए म्रथ यन व्या इंटम याम । दूस्की शृक्षाम (मृद्धः इश्निट्ड्टक्र नागः ।। क रवारत ख ३२ इहेरेना (यकारम ! कल माहिरना छ० म हिल (यमन काटम<sub>ी)</sub> क्छकट्य श्रेड (बाद्र श्रिट्टब গলা ৷ তাঁৰে পালে দুব হবো যে মুদ্ৰ রাশ্ গলা 🚶 কভ कान करत कथा एति स्वाह करा ए जीव करह कल गा-चि क्टव करूर ।। गृर्थ में। शाहित्व। विकास व्यास क्हे नोता । अध्यक्षा वृत्यिद्व मध्य व्याध्यक् नावि ।। नान करत करे वात वृक्ति (भारत एरत । तरम कारम द्विम्का । मरक् काङ्ग्र का चरत । क्या ५३ करत (यन श्रेकांन छ চিতে ৷ বন পোড়া মুগী মত দহিতেকে চিত্তে !৷ ক (मरा प्रशिद्या धनी भनी र! स्थाया। काउन रहेन

कालि द्वाबिएस संग्रेश । व्यक्तिय विवय प्रिचिव व জিশহ I রজনী হতেছে বৃ**জি সে কি অ**ভিশ্ন । বি न, नाथ चायु द्वि नात्थ (किन थाति । वासि वाहि एक फेमरक काब (कवा शहरी ।। सम्। रेमवाय वृक्ति हरे লো মনে ভাবে ৷ নাথ কেন নাহিরণ আমার কনে ভা ता । त्थ्रम खरा यूत्रं वृक्ति वर्षे भाव वर्षा । उहि काष्ठ बार्छ भन भरत इंटना कारम ॥ इंडान श्रिश बाब जाएक कियं कास । युक आबू हरता क्ती कावि परिम थाम। थारकः साँकि मारत रयभन काही रेक। ক ছে আমার থাক্তে পতি কাবে ছলোটভাট কখন বসন টানে কভু পাস কেরে। রক্ত দেখে পতি কোর ए मि शरफ (करङ ।। करबर भरपर होकाश स्थ ६वी । कलकात्त्र कामि इस मुनि ॥ कनु शांक कड् कार्य कल् हाहे खरन १ पृक्टन पिछाद मुख्य कि ममखरत চেট্টা করিল বছ ভলিতে গুণাকরে। টোপাদ্থায়ে भोरन (यमन छण करत्र। निपु) गंड बारहत्राम कि क (इ (म खरण । পড़ि श्री (क दल **एकान मरन ख**रण ।! অভিনারাজ্বালা বির্হাশলে জলে। দাসে বলে পি

विद्वना भागाना अञ्चल ।।

भागपा नुस्ता ।

## अप मुक्तजीत वित्र ।।

भाक्तार वित्रक् कारूप करणा सः विरुप कार्यादक व भाक्तार वाजना महिन्द । किया कविद्रक् मनिः यमन परिट्र शागीः पलगाति समीवरण श्रार्थ गाँवित्यरः कि क्रांचार क्षाप्त क्षाप्त सीवन । धार्यदा ।

विक्र क्षा माणाव र नवाण श्रमी कानिक निक्त रहें क्षणा नाकिक साथ भूणी वृत्ति सायरत ।। क्षणां भी कान बिक्र कराव स्था कि कराव स्था माणि केल्य कराव है। (भाव) केल्य थाकि कि कि कि काम काय विक्र कराव श्रम विकारती शारण कि मय हैं कृषिक करेंग्य म्थम निक क्षण हो। याराव मक किन कि कि कि क्षण कराव ब्रिक्ट हिंग हो। याराव मक किन कि कि कि विकारता ना श्रम का कि केल्य का का का वास या स्था विकारता ना श्रम का कि कि का का कि निक्त विवाद केल्य का कि कि कि कि निक्त विवाद केल्य का का कि का का कि कि निक्त विवाद केल्य का का कि का का कि कि कि निक्त का स्थायर । यह जाम कि का का कि कि केल्य केल्य केल्य का स्थायर । यह जाम कि का का कि कि केल्य केल्य केल्य का स्थायर । यह जाम कि का का कि कि केल्य केल्य

T 6 3

क्षित्रक क्षार्थ ।

300

ङ्क्त अस्त व्यास क्षेत्र शहार द्वा । तक वादि वि (स निक्रिया करते विस्तित स्ति । निक्रिये जेनकाही वृद्धि भारत्त्र**मस्तरत** । चकाषाः अस्तिम् भारत्र सरम करे स क्रास । नारदत् पृथ्य (अधिरक्ष मृत्यत मारचेर्ड १५/३

मुद्राल मुह्निय एप है (महेराज: सन्त्र) (है 11 अहे याज या श्रुम् कर्जिट्स घरम कंडएह । सिम् । मः कान्द्रेरमः। स्मरत

भूव्य गिरत इक्टा ।। (इन कृतियान यश्चिम इटल) मन् श्रद्ध । अलाक स्टेटना निभी नेभी याश व्यद ॥ श्रम्म भू प्र इत्ना द्रोत छेपभटा । समस्य मृत्य प्र

ক্লাবেশিখনে কর্মারে 🔠 নয়নেতে দিয়ে বছরিং বাড়ী सारात र कान करमा नाश्यिन (शास्त्र कांग्रेस (त

विभाईक हरेद्र रहा वाकियन भागदा । सभाव हो।

लाहि दात्न श्राप्त श्राप्त ।। यन त्मक्रिक शृद्ध यन (क लाहर यहरे हर है। भरत ने विरम मन भरत भारत कि

अभरखरत । (कश्कात्र माहि छाटन गरमव वाजनारत मुख्यम विভावयाचार मम्बनारत ।। अथारन मुखतो है

কিংলন শর্ম। ছডেরে ভিরেইখনেইনাখিল ব্যাতের इंग्लिड नाहिक भारत भारत नाशि वंशरत । जुरमण

शिक्त नरम क्रि कि छ। नन्दि ।। दित्र । १६९ ५% **एटग्रंटरू वाकि अग्रद्ध र कल्परश**ेत्र वाशाचाळ श्रार्थ न

ত্বৰ মুঞ্জাকি সধী গণের সংঘাধন।
বুকা বিজয় রাজ বালাকি হজে ডোমান ।
ভাৰসঃ করিবোধেনি এই শুভিকার দ

नियाती । व्यक्तिति मृथ्य सिन्धि मका स्वार्थि । रन्ते महत्व वटन ना केत विकिति। श्रीट्रिंस मिस्सि द्याँ प्रीतिहार कील सिन्धि हिस्स रण्टेल एडण् जारे काई एस विक्रामित स्वार्थित विकर्षेट्रक का का रभाजी विक्रिक्टल क्तिर्वा मासि यक्तिर रामन स्वित्र

रिय निर्मा कि जा भा स्थानिक । दिवस शास्त्राम क

इ। जार किन माहन कविष्ठ शक्ष लाह ।। बरनामा (भ রে ব্যথমে কি লয়ন। নাহিক ভাতার ঘেষে মনেও एवना ११ किया नतारा चलताथी बरना (ज सन् । कि काइरव भाग करन कविद्या स्तामन ।। विरम्पीया दा व कर्ता के व रंगा शहा व ने देश का क नाहि अब विध नी जिल्लान । श्रान एनी मदनश्कतिका विहास । ना कृष्टित अस्तावहां कना शांचकात्र ॥ विवस्थरक कार्या क्रिक् करर अवस्थारत देवाम । बरणका कन्ना छेति छ । य भाषाद्रती भाक यति इसम्य साहि क्लेक्था। कन्। कहिट्दा भव (श्रास्ट्र एक बाधाना, भव्न बिहाद्रिरस बरन कतिरमा (भाषतः। यह।काङ केशा नरक स्थमणी गरा।। वात्रवात स्थादत चीताना कत बिख्ताना। विस्थ व कानिएस भारा कना कर जाना है। जुरुश महिनी न दर लिहन करेल । तक्क का समान मिद्रम त्वज मुहारेन वान शृक्षा कांत्र क्लो कविन जासका। चरन। एक कानि न किए (भोषक रग छात्र ।। भर्मना छेगान्। भन छ। नाकन कारमाना कतिरक नश् छात्रे देकल बाह्य सारम ক্ষার বাহিতে রহে বিহাদিত হয়ে ৷ কেমনে পাণি বে পণ উপাত্ত না পেয়ে ৷৷ স্বয় অভিভ হয় মেশি লো নয়নে। স্বধাষ্ট লাখন করি বসিল ভোজনে ।।

स्था । कि सार्थ देन जरे विवह शासना । कि सा द्वा । कि सार्थ देन जरे विवह शासना । कि सा क् अपेथी कि सार्व श्रद्धांश महन वजना । का कि स्माव शाकि सांक; व्यथिन मूर्ग कि किस्स गाँउ क शृवकी, दस्तवा श्राह्म, श्रद्धांशिक किरम सानः स्नामा सार्व सामा गाया सा

पनक विभागी। भग्नय कामान्यहेट्स कामा छेनाक् छक्ता (वा) मक्ति मर्गः भग्निकतरमः गृह यरवा भाग स्वा

(कह मेंबाद वराव समारि, छोकि छ वाहिएव भी। य भ बन्दाम. शिष्ठ नहत्वा राज्य बरमा भारत राग ॥ सन् अस्पत्रा अस्य बारोतः विश्वन्देशिय त्या । कि कडि क्षेत्र, भन्नाचे घात्, का त्यांच केचात्र त्या।। स्काम क ब्रि, जबान होत. रूटना कित मिन त्या । अके वि मिले. হাবে এখিন পারি যে খাকিছে গো গা কন্যর দত হৈছিলে বডাইবো একান্ডরে পোন ওবেই ওজা ছইবে অভ্রেষ্টে তবেরৰ গোং। এই ভাবিচ্ছে যায় চলিয়ে वानांत गुरक् त्या हे भया। छेलात, भया करत, का द्वारकः मा जिल्ला (भा ।। मन्त्र मर्गाक्षः तरह निमानः দিকদ বেগেতে গো ৷ কিঞ্ছিৎ পরে, ইমারী ধরে, খা निया सहेदना देशा । एमधिन कार से भीरेष निकिद्य वाहिका क्षारणा। कानाव श्राप्ता त्व किशिव वाक्ष्रक्षिम्दनात्या ।। क्ष्मान वाहिः इति क्वाहि नारथत में हेरणो एका मिटी क्या के तका रिश्व करता है? বে ছিল্ট ই পো ৷৷ সেটেড নিৰ্মাণ শুধান্ধ ভাতঃ বেবেল उनवानि। कार्य पार्क सारतः वाचि (छ। श्रीरव, वीवि रन अकार का ।। ल्लिट्यीचंदली, विश्वर दाना, हारफ मा अर्पकर्षा । वर्कतिहा शादवीविकार विचार वन (मा ।। काम छानायः जीतन यात्रः कृति कि छेग ध्यता । बादश हुनिः सम्ड खनिः निकाय ना क्रमा ला ।। गान्य कुळाला, कुमलानावा विषय सुन्तर द्या क्ट्य काराबः स्वरक्षत्र भित्रः कात्रश्चादत्र स्थापा खादक् व वड, महेर्य मामछ। भाभित्त बाहेरमा त्या । वित्रहि भेट्स, तरक व्यक्तिरद्रहकत्र व्यक्तिरक रमा ।। कविरस प गः, कारन रूपमा शृक्यांत काम (सा । वाकिका मनी। क्यसन्ति। अपनी त्याका चित्र रेग्सा कृत् भारम ्य क्षा करत संवर्षणा अवस्था नाम । वारेक्ष बायु बर्ट ब्राव्स प्रत (मा. ध्र. मुकरन सिरानः, निवासि नरनः अ र कार्न मध्य (भा। विवस्तुन नः स्टनः श्रवनः क नि वादन ভाविद्या भी नार्थात जान । नंद्या रेडेटा ने जिन्न मा ना (पृथि (भा। ये उ ज्लासमी स्रतः इंड करते षेष्ट (भा ।। कञ्च्यरण, कञ्च वज्ञरमः होत्व स्कृतन प রে গো। ক্রণেক উঠে, ক্লণেক ছুটে; ক্লণে পড়ে খা के (भा 11 नरह (स छित्रः क्रम्भ महित्रः व्यामुधाने (क ण (गा। अक्राल ध्रती, रहक द्रवजी निन्त ना इहेन (गा निषोत्र (ष्यः (षथि विष्यः पारकः इत ভारव (ग) हिंड ह्यू करू, निमात मर्फ तरह बामा मः देश रहा।। अ या क्रांचारका कि क्रांचा नभी बंध क्रां शा। श बाउ दिशा भारते तथी। के देन कमात क्या ।। भा